

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्री ललिता-लकारादि-शत-नाम-स्तोत्र-साधना

॥ पूर्व-पीठिका ॥

कैलास-शिखरासीनं, देव-देवं जगद्-गुरुम् ।

पप्रच्छेशं परानन्दं, भैरवी परमेश्वरम् ॥१॥

॥ श्रीभैरव्युवाच ॥

कौलेश! श्रोतुमिच्छामि, सर्व - मन्त्रोत्तमोत्तमम् ।

ललिताया शत-नाम, सर्व-काम-फल-प्रदम् ॥२॥

॥ श्रीभैरवोवाच ॥

शृणु देवि महा - भागे!, स्तोत्रमेतदनुत्तमम् ।

पठनाद् धारणादस्य, सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत् ॥३॥

षट्-कर्माणि सिद्ध्यन्ति, स्तवस्यास्य प्रसादतः ।

गोपनीयं पशोरग्रे, स्व-योनिमपरे यथा ॥४॥

॥ विनियोग ॥

ललिताया लकारादि, नाम-शतकस्य देवि!

राज-राजेश्वरो ऋषिः, प्रोक्तो छन्दोऽनुष्टुप् तथा ॥५॥

देवता ललिता-देवी, षट्-कर्म-सिद्ध्यर्थे तथा ।

धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु, विनियोगः प्रकीर्तितः ॥६॥

वाक्-काम-शक्ति-वीजेन, कर-षडङ्गमाचरेत् ।

प्रयोगे बाला-त्र्यक्षरी, योजयित्वा जपं चरेत् ॥७॥

॥ मूल श्रीललिता लकारादि-शत-नाम स्तोत्रम् ॥

ललिता^१ लक्ष्मी^२ लोलाक्षी^३, लक्ष्मणा^४ लक्ष्मणार्चिता^५ ।

लक्ष्मण-प्राण - रक्षिणी^६, लाकिनी^७ लक्ष्मण-प्रिया^८ ॥१॥

लोला^९ लकारा^{१०} लोमशा^{११}, लोल-जिह्वा^{१२} लज्जा-वती^{१३} ।

लक्ष्या^{१४} लाक्ष्या^{१५} लक्ष-रता^{१६}, लकाराक्षर-भूषिता^{१७} ॥२॥

लोल-लयात्मिका^{१८} लीला^{१९}, लीला-वती^{२०} च लाङ्गली^{२१} ।

लावण्यामृत - सारा^{२२} च, लावण्यामृत - दीर्घिका^{२३} ॥३॥

लज्जा^{२४} लज्जा-मती^{२५} लज्जा^{२६}, ललना^{२७} ललन-प्रिया^{२८} ।

लवणा^{२९} लवली^{३०} लसा^{३१}, लाक्षकी^{३२} लुब्धा^{३३} लालसा^{३४} ॥४॥

लोक-माता^{३५} लोक-पूज्या^{३६}, लोक - जननी^{३७} लोलुपा^{३८} ।
लोहिता^{३९} लोहिताक्षी^{४०} च, लिङ्गाख्या^{४१} चैव लिङ्गेशी^{४२} ॥५॥
लिङ्ग-गीतिः^{४३} लिङ्ग-भवा^{४४}, लिङ्ग-माला^{४५} लिङ्ग-प्रिया^{४६} ।
लिङ्गाभिधायिनी^{४७} लिङ्गा^{४८}, लिङ्ग-नाम-सदानन्दा^{४९} ॥६॥
लिङ्गामृत-प्रीता^{५०} लिङ्गार्चन-प्रीता^{५१} लिङ्ग-पूज्या^{५२} ।
लिङ्ग-रूपा^{५३} लिङ्गस्था^{५४} च, लिङ्गालिङ्गन-तत्परा^{५५} ॥७॥
लता-पूजन-रता^{५६} च, लता - साधक - तुष्टिदा^{५७} ।
लता - पूजक - रक्षिणी^{५८}, लता-साधन-सिद्धिदा^{५९} ॥८॥
लता - गृह - निवासिनी^{६०}, लता-पूज्या^{६१} लताराध्या^{६२} ।
लता-पुष्पा^{६३} लता-रता^{६४}, लता-धारा^{६५} लता-मयी^{६६} ॥९॥
लता - स्पर्शन - सन्तुष्टा^{६७}, लताऽऽलिङ्गन-हर्षिता^{६८} ।
लता-विद्या^{६९} लता-सारा^{७०}, लताऽऽचारा^{७१} लता-निधिः^{७२} ॥१०॥
लवङ्ग - पुष्प - सन्तुष्टा^{७३}, लवङ्ग-लता-मध्यस्था^{७४} ।
लवङ्ग - लतिका - रूपा^{७५}, लवङ्ग-होम-सन्तुष्टा^{७६} ॥११॥
लकाराक्षर - पूजिता^{७७}, च लकार - वर्णोद्भवा^{७८} ।
लकार-वर्ण-भूषिता^{७९}, लकार-वर्ण-रुचिरा^{८०} ॥१२॥
लकार - बीजोद्भवा^{८१} तथा लकाराक्षर-स्थिता^{८२} ।
लकार-बीज-निलया^{८३}, लकार-बीज-सर्वस्वा^{८४} ॥१३॥
लकार - वर्ण - सर्वाङ्गी^{८५}, लक्ष्य-छेदन-तत्परा^{८६} ।
लक्ष्य-धरा^{८७} लक्ष्य-घूर्णा^{८८}, लक्ष-जापेन-सिद्धिदा^{८९} ॥१४॥
लक्ष-कोटि-रूप-धरा^{९०}, लक्ष-लीला-कला-लक्ष्या^{९१} ।
लोक-पालेनार्चिता^{९२} च, लाक्षा-राग-विलेपना^{९३} ॥१५॥
लोकातीता^{९४} लोपा-मुद्रा^{९५}, लज्जा-बीज-स्वरूपिणी^{९६} ।
लज्जा-हीना^{९७} लज्जा-मयी^{९८}, लोक-यात्रा-विधायिनी^{९९} ॥१६॥
लास्य-प्रिया^{१००} लय-करी^{१०१}, लोक-लया^{१०२} लम्बोदरी^{१०३} ।
लघिमादि - सिद्धि-दात्री^{१०४}, लावण्य-निधि-दायिनी^{१०५} ।
लकार-वर्ण-ग्रथिता^{१०६}, लं-बीजा^{१०७} ललिताम्बिका^{१०८} ॥१७॥

॥ फल-श्रुति ॥

इति ते कथितं देवि!, गुह्याद् गुह्य-तरं परम् ।

प्रातः-काले च मध्याह्ने, सायाह्ने च सदा निशि ।

यः पठेत् साधक-श्रेष्ठो, त्रैलोक्य-विजयी भवेत् ॥१॥

सर्व - पापि - विनिर्मुक्तः, स याति ललिता-पदम् ।
 शून्यागारे शिवारण्ये, शिव-देवालये तथा ॥२॥
 शून्य - देशे तडागे च, नदी - तीरे चतुष्पथे ।
 एक-लिङ्गे ऋतु-स्नाता-गेहे वेश्या-गृहे तथा ॥३॥
 पठेदष्टोत्तर - शत - नामानि सर्व - सिद्धये ।
 साधको वाञ्छां यत्-कुर्यात्, तत्तथैव भविष्यति ॥४॥
 ब्रह्माण्ड-गोलके याश्च, याः काश्चिज्जगती-तले ।
 समस्ताः सिद्धयो देवि!, करामलक-वत् सदा ॥५॥
 साधक - स्मृति - मात्रेण, यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः ।
 स्वयमायान्ति पुरतो, जपादीनां तु का कथा ॥६॥
 अयुतावर्त्तनाद् देवि!, पुरश्चर्याऽस्य गीयते ।
 पुरश्चर्या-युतः स्तोत्रः, सर्व-कर्म-फल-प्रदः ॥७॥
 सहस्रं च पठेद्यस्तु, मासार्धं साधकोत्तमः ।
 दासी-भूतं जगत्-सर्वं, मासार्धाद् भवति ध्रुवम् ॥८॥
 नित्यं प्रति - नाम्ना हुत्वा, पलाश - कुसुमैर्नरः ।
 भूलोकस्थाः सर्व-कन्याः, सर्व-लोक-स्थितास्तथा ॥९॥
 पातालस्थाः सर्व-कन्याः, नाग-कन्याः यक्ष-कन्याः ।
 वशीकुर्यान्मण्डलार्धात्, संशयो नात्र विद्यते ॥१०॥
 अश्वत्थ - मूले पठेत् शत - वारं ध्यान - पूर्वकम् ।
 तत्-क्षणाद् व्याधि-नाशश्च, भवेद् देवि! न संशयः ॥११॥
 शून्यागारे पठेत् स्तोत्रं, सहस्रं ध्यान - पूर्वकम् ।
 लक्ष्मी प्रसीदति ध्रुवं, स त्रैलोक्यं वशिष्यति ॥१२॥
 प्रेत - वस्त्रं भौमे ग्राह्यं, रिपु - नाम च वेष्टितम् ।
 प्राण-प्रतिष्ठां कृत्वा तु, पूजां चैव हि कारयेत् ॥१३॥
 श्मशाने निखनेद् रात्रौ, द्वि - सहस्रं पठेत् ततः ।
 जिह्वा-स्तम्भनमाप्नोति, सद्यो मूकत्वमाप्नुयात् ॥१४॥
 श्मशाने पठेत् स्तोत्रं, अयुतार्धं सु - बुद्धिमान् ।
 शत्रु-क्षयो भवेत् सद्यो, नान्यथा मम भाषितम् ॥१५॥
 प्रेत - वस्त्रं शनौ ग्राह्यं, प्रति - नाम्ना सम्पुटितम् ।
 शत्रु-नाम लिखित्वा च, प्राण-प्रतिष्ठां कारयेत् ॥१६॥

ततः ललितां सम्पूज्य, कृष्ण - धत्तूर - पुष्पकैः।
 श्मशाने निखनेद् रात्रौ, शत-वारं पठेत् स्तोत्रम् ॥१७॥
 ततो मृत्युमवाप्नोति, देव - राज - समोऽपि सः।
 श्मशानाङ्गारमादाय, मङ्गले शनिवारे वा ॥१८॥
 प्रेत - वस्त्रेण संवेष्ट्य, बध्नीयात् प्रेत - रज्जुना ।
 दशाभिमन्त्रितं कृत्वा, खनेद् वैरि-वेश्मनि ॥१९॥
 सप्त - रात्रान्तरे तस्योच्चाटनं भ्रामणं भवेत्।
 कुमारीं पूजयित्वा तु, यः पठेद् भक्ति-तत्परः ॥२०॥
 न किञ्चिद् दुर्लभं तस्य, दिवि वा भुवि मोदते ।
 दुर्भिक्षे राज-पीडायां, संग्रामे वैरि-मध्यके ॥२१॥
 यत्र यत्र भयं प्राप्तः, सर्वत्र प्रपठेन्नरः ।
 तत्र तत्राभयं तस्य, भवत्येव न संशयः ॥२२॥
 वाम-पाश्वे समानीय, शोधितां वर-कामिनीम् ।
 जपं कृत्वा पठेद् यस्तु, तस्य सिद्धिः करे स्थिता ॥२३॥
 दरिद्रस्तु चतुर्दश्यां, कामिनी - सङ्गमैः सह ।
 अष्ट-वारं पठेद् यस्तु, कुबेर-सदृशो भवेत् ॥२४॥
 श्रीललितां महा-देवीं, नित्यं सम्पूज्य मानवः ।
 प्रति-नाम्ना जुहुयात् स, धन-राशिमवाप्नुयात् ॥२५॥
 नवनीतं चाभिमन्त्र्य, स्त्रीभ्यो दद्यान्महेश्वरि !
 वन्ध्यां पुत्र-प्रदं देवि!, नात्र कार्या विचारणा ॥२६॥
 कण्ठे वा वाम-बाहौ वा, योनौ वा धारणाच्छिवे !
 बहु-पुत्र-वती नारी, सुभगा जायते ध्रुवम् ॥२७॥
 उग्रं उग्रं महदुग्रं, स्तवमिदं ललितायाः ।
 सु-विनीताय शान्ताय, दान्तायाति- गुणाय च ॥२८॥
 भक्ताय ज्येष्ठ - पुत्राय, गुरु - भक्ति - पराय च ।
 भक्त - भक्ताय योग्याय, भक्ति-शक्ति-पराय च ॥२९॥
 वेश्या - पूजन - युक्ताय, कुमारी - पूजकाय च ।
 दुर्गा-भक्ताय शैवाय, कामेश्वर-प्रजापिने ॥३०॥
 अद्वैत - भाव - युक्ताय, शक्ति - भक्ति - पराय च ।
 प्रदेयं शत-नामाख्यं, स्वयं ललिताज्ञया ॥३१॥

खलाय पर - तन्त्राय, पर - निन्दा - पराय च ।

भ्रष्टाय दुष्ट-सत्त्वाय, परी-वाद-पराय च ॥३२॥

शिवाभक्ताय दुष्टाय, पर - दार - रताय च ।

वेश्या-स्त्री-निन्दकाय च, पञ्च-मकार-निन्दके ॥३३॥

न स्तोत्रं दर्शयेद् देवि!, मम हत्या-करो भवेत् ।

तस्मान्न दापयेद् देवि!, मनसा कर्मणा गिरा ॥३४॥

अन्यथा कुरुते यस्तु, स क्षीणायुर्भवेद् ध्रुवम् ।

पुत्र-हारी च स्त्री-हारी, राज्य-हारी भवेद् ध्रुवम् ॥३५॥

मन्त्र - क्षोभश्च जायते, तस्य मृत्युर्भविष्यति ।

क्रम-दीक्षा-युतानां च, सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥३६॥

क्रम-दीक्षा-युतो देवि!, क्रमाद् राज्यमवाप्नुयात् ।

क्रम-दीक्षा-समायुक्तः, कल्पोक्त-सिद्धि-भाग् भवेत् ॥३७॥

विधेर्लिपिं तु सम्मार्ज्यं, किङ्करत्वं विसृज्य च ।

सर्व-सिद्धिमवाप्नोति, नात्र कार्या विचारणा ॥३८॥

क्रम - दीक्षा - युतो देवि!, मम समो न संशयः ।

गोपनीयं गोपनीयं, गोपनीयं सदाऽनघे ॥३९॥

स दीक्षितः सुखी साधुः, सत्य-वादी जितेन्द्रियः ।

स वेद-वक्ता स्वाध्यायी, सर्वानन्द-परायणः ॥४०॥

स्वस्मिन् ललितां सम्भाव्य, पूजयेज्जगदम्बिकाम् ।

त्रैलोक्य-विजयी भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥४१॥

गुरु-रूपं शिवं ध्यात्वा, शिव-रूपं गुरुं स्मरेत् ।

सदा-शिवः स एव स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥४२॥

॥ श्रीकौलिकार्णवे श्रीभैरवी-संवादे षट्-कर्म-सिद्ध-दायकं

श्रीमल्ललिताया लकारादि-शत-नाम-स्तोत्रम् ॥

ॐॐॐ

श्रीललिता-लकारादि-शत-नाम-स्तोत्र-साधना (हिन्दी-रूपान्तर)

कौलिकार्णव-तन्त्रोक्त 'श्री ललिता शत-नाम स्तोत्र' यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। यह स्तोत्र जगदलपुर के करिया पाथर श्मशान में प्रवास कर रहे अवधूत श्री चिदानन्द-जी से प्राप्त हुआ था। अवधूत श्री चिदानन्द जी ने अपना कोई परिचय नहीं दिया, किन्तु उनका ज्ञान-भण्डार असीमित था। उन्हीं के कथनानुसार इसकी साधना श्रीगुरुदेव के द्वारा अत्यन्त ही योग्य शिष्य को बतलाई जाती है। पश्वाचारी साधक यदि इसका प्रयोग करे, तो उसका अनिष्ट हो सकता है। अतः वीराचारी साधक को ही इसकी साधना करनी चाहिए। प्रयोगों में जहाँ प्रत्येक नाम का अलग-अलग प्रयोग करना है, वहाँ प्रत्येक नाम 'चतुर्थ्यन्त' प्रयुक्त होगा, अन्यत्र केवल स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। अधिक पाठ करते समय प्रथम आवृत्ति में पूरा स्तोत्र (अन्तिम श्लोक तक) तथा मध्य की सभी आवृत्तियों में केवल नामों का पाठ और अन्तिम आवृत्ति में नामों के पाठ के बाद पूरी फल-श्रुति का पाठ करना चाहिए। शेष विधि जैसी फल-श्रुति में वर्णित है, वैसी ही है। -श्री भैरवानन्दनाथ

कैलास शिखर पर बैठे हुए देवों के देव जगद्-गुरु परमेश्वर से भैरवी ने कहा- हे कौलेश !, सभी मन्त्रों में उत्तम से भी उत्तम समस्त कामनाओं के फल को देनेवाला 'श्रीललिता शत-नाम स्तोत्र' सुनने की इच्छा है ॥१-२॥

श्रीभैरव ने कहा- हे महा-भागे ! इस उत्तम स्तोत्र को सुनो। इसे पढ़ने और धारण करनेवाला समस्त सिद्धियों का स्वामी होता है। इस स्तव की कृपा से षट्-कर्मों की सिद्धि होती है। पशुओं के आगे इसे स्व-योनि के समान गुप्त रखना चाहिए ॥३-४॥

विनियोग-श्रीललिता के इस नाम-शतक के राज-राजेश्वर ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, श्रीललिता देवी देवता तथा षट्-कर्मों की सिद्धि-सहित धर्म-अर्थ-काम व मोक्ष की प्राप्ति के लिए विनियोग है। वाक् (ऐं), काम (क्लीं), शक्ति (सौः), वीजों से कर-षडङ्ग-न्यास करें और प्रयोगों में बाला त्र्यक्षरी (ऐं क्लीं सौः) की योजना करें।

श्लोक १ से श्लोक १८ तक प्रथम नाम 'ललिता' से लेकर 'ललिताम्बिका' तक १०८ नाम स्पष्ट रूप से वर्णित हैं।

फल-श्रुति-जो श्रेष्ठ साधक सदा प्रातः-काल, मध्याह्न (दोपहर), सन्ध्या और रात्रि-काल में इसका पाठ करते हैं, वे सभी पापों से मुक्त होकर त्रैलोक्य-विजयी होते हैं और अन्त में ललिता के पद (स्वरूप या मुक्ति) को प्राप्त होते हैं ॥१-२॥

निर्जन भवन, श्मशान, शिवालय, निर्जन स्थान, तालाब और नदी के किनारे, चतुष्पथ पर, एक-लिङ्ग (जिस शिव-लिङ्ग के चारों तरफ पाँच कोस तक दूसरा शिव-लिङ्ग न हो), ऋतु-स्नाता स्त्री या वेश्या के घर में समस्त सिद्धियों की प्राप्ति के लिए अष्टोत्तर-शत-नामों का पाठ करना चाहिए। इन स्थानों पर पाठ करनेवाला जो भी कामना करता है, वह पूरी होती है। इस पृथ्वी पर और ब्रह्माण्ड में जितनी भी सिद्धियाँ हैं, सभी कर-तल-गत हो जाती हैं और स्मरण करने मात्र से साधक को बिना जप आदि के ही वे प्रत्यक्ष हो जाती हैं ॥ ३-६ ॥

अयुत (दस हजार) आवृत्तियों में इसका पुरश्चरण होता है। पुरश्चरण से सिद्ध स्तोत्र सभी कर्मों के फल को देने में समर्थ होता है ॥७॥

पुरश्चरण के बाद एक सहस्र बार इसका पाठ करने से १५ दिन में सारे जगत् का वशीकरण होता है ॥८॥

नित्य प्रत्येक नाम द्वारा पलाश के पुष्पों से हवन करने से छः मास में सभी लोकों की कन्याओं का वशीकरण होता है ॥९-१०॥

अश्वत्थ वृक्ष के मूल भाग में बैठकर ध्यान-पूर्वक १०८ बार पाठ करने से रोग नष्ट होता है ॥११॥

शून्य गृह में ध्यान-पूर्वक १००० बार पाठ करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है और तीनों लोक वशीभूत होते हैं ॥१२॥

मङ्गल के दिन प्रेत-वस्त्र लाए, शत्रु-नाम उसमें लपेटे, प्राण-प्रतिष्ठा कर उसकी पूजा करे, रात्रि में उस वस्त्र को श्मशान में गाड़कर, २००० पाठ करे, तो शत्रु की जिह्वा स्तम्भित होती है। वह गूँगा हो जाता है ॥१३-१४॥

श्मशान में इस स्तोत्र का ५००० पाठ करे, तो शत्रु-नाश होता है ॥१५॥

शनि के दिन प्रेत-वस्त्र लाए, प्रत्येक नाम से सम्पुटित शत्रु-नाम लिखे, प्राण-प्रतिष्ठा कर ललिता की पूजा काले धतूर-पुष्पों से करे, रात्रि में श्मशान में गाड़ कर १०० बार स्तोत्र का पाठ करे, तो शत्रु की मृत्यु होती है ॥१६-१७॥

मङ्गल या शनि के दिन श्मशान से अङ्गार लेकर प्रेत-वस्त्र में लपेट कर प्रेत-रस्सी से बाँधे, उसे १० बार अभिमन्त्रित कर शत्रु-गृह में गाड़ दे। सात रात्रि के भीतर शत्रु का उच्चाटन होता है ॥१८-१९॥

कुमारी-पूजा कर भक्ति - पूर्वक पाठ करे, तो पृथ्वी पर कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता ॥२०॥

दुर्भिक्ष, राज-भय, युद्ध और शत्रुओं के मध्य जहाँ कहीं भय हो, इसका पाठ करे, तो सङ्कट दूर होता है ॥२१-२२॥

शोधिता श्रेष्ठ कामिनी को अपने बाँई ओर बैठा कर जप-पूर्वक स्तोत्र का पाठ करे, तो सिद्धि शीघ्र मिलती है ॥२३॥

चतुर्दशी के दिन कामिनी के साथ जो दरिद्र व्यक्ति ८ बार स्तोत्र-पाठ करता है, वह कुबेर के समान धनाढ्य होता है ॥२४॥

नित्य श्री महा-देवी ललिता की पूजा कर प्रत्येक नाम से हवन करे, तो विपुल धन प्राप्त होता है ॥२५॥

मक्खन को अभिमन्त्रित कर बाँझ स्त्री को खिलाए, तो वह पुत्र-वती होती है ॥२६॥

कण्ठ, बाँई भुजा या योनि में धारण करने से स्त्री पुत्र लाभ करती है ॥२७॥

श्रीललिता का यह स्तोत्र महा - उग्र है। विनम्र, शान्त, भक्त, ज्येष्ठ पुत्र, गुरु-भक्ति-परायण, भक्तों के भक्त, वेश्या और कुमारी-पूजन-कर्ता, दुर्गा-भक्त, शिव के भक्त, कामेश्वर-मन्त्र के जप-कर्ता, अद्वैत-भावापन्न और शक्ति में भक्ति रखनेवाले साधक को यह शत-नाम देना चाहिए, ऐसी स्वयं ललिता की आज्ञा है ॥२८-३१॥

खल (दुष्ट प्रकृतिवाला), पर-तन्त्र (जो किसी दूसरे के अधीन हो), दूसरों की निन्दा करनेवाला, भ्रष्ट (पतित या अधर्मी), परोवादी (दूसरों की निन्दा करनेवाला), शिव में अभक्ति रखनेवाला, दूसरे की स्त्री में आसक्त, वेश्या और स्त्रियों की निन्दा करनेवाला तथा पञ्च-मकारों की निन्दा करनेवाला-इनको यह स्तोत्र दिखाने से मेरी हत्या लगती है। अतः मन, वचन और कर्म से भी स्तोत्र नहीं देना चाहिए। जो इसके विपरीत करता है, वह पुत्र, स्त्री और राज्य से वञ्चित होता है। उसकी आयु निश्चित-रूप से कम हो जाती है। उसका मन्त्र क्षुभित होकर उसी का नाश कर देता है ॥३२-३५॥

क्रम-दीक्षा से युक्त साधक को सिद्धि मिलती है। वह कल्पोक्त सिद्धियों को प्राप्त कर क्रमशः राज्य-वैभव को प्राप्त करता है। वह ब्रह्मा के लेख (प्रारब्ध) को भी मिटाकर संसार-बन्धन से छूटकर सभी सिद्धियाँ प्राप्त करता है। क्रम-दीक्षा से युक्त साधक मेरे समान ही है। वही दीक्षित है, सुखी, साधु, सत्य-वादी, जितेन्द्रिय, वेद-वक्ता, स्वाध्यायी और समस्त आनन्दों में मग्न रहनेवाला है ॥ ३६-४०॥

जो स्वयं को ललिता-रूप जानकर जगदम्बा का पूजन करता है, वह त्रैलोक्य-विजयी होता है। जो शिव को गुरु और गुरु को शिव-रूप में जानता है, वही सदा-शिव है, इसमें सन्देह नहीं। हे देवि, प्रयत्न-पूर्वक इसे गोपनीय रखना चाहिए ॥४१-४२॥

श्रीललिता-लकारादि-शत-नाम-जप-साधना

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीललिता-लकारादि-शत-नाम-माला-मन्त्रस्य श्रीराज-राजेश्वरो ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिताम्बा देवता। 'क-ए-ई-ल-ही' बीजं। 'स-क-ल-ही' शक्तिः। 'ह-स-क-ह-ल-ही' उत्कीलनं। श्रीललिताम्बा-देवता-प्रसाद-सिद्धये षट्-कर्म-सिद्ध्यर्थे तथा धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु पूजने तर्पणे च विनियोगः।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

ॐ श्रीराज-राजेश्वरो-ऋषये नमः— शिरसि। ॐ अनुष्टुप्-छन्दसे नमः— मुखे। ॐ श्रीललिताम्बा-देवतायै नमः— हृदि। ॐ 'क-ए-ई-ल-ही' बीजाय नमः— लिङ्गे। ॐ 'स-क-ल-ही' शक्तये नमः— नाभौ। ॐ 'ह-स-क-ह-ल-ही' उत्कीलनाय नमः— सर्वाङ्गे। ॐ श्रीललिताम्बा-देवता-प्रसाद-सिद्धये षट्-कर्म-सिद्ध्यर्थे तथा धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु पूजने तर्पणे च विनियोगाय नमः— अञ्जलौ।

॥ कर-न्यास ॥

ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ही' अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ही' तर्जनीभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ही' मध्यमाभ्यां नमः। ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ही' अनामिकाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ही' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ही' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

॥ अङ्ग-न्यास ॥

ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ही' हृदयाय नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ही' शिरसे स्वाहा। ॐ 'सौः स-क-ल-ही' शिखायै वषट्। ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ही' कवचाय हुम्। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ही' नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ 'सौः स-क-ल-ही' अस्त्राय फट्।

॥ ध्यान ॥

बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनाम्।

पाशांकुश-धनुर्वाणान्, धारयन्तीं शिवां भजे ॥

॥ मानस-पूजन ॥

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं

धूपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

॥ श्रीललिता- लकारादि-शत-नामावली द्वारा जप ॥

१- श्रीललितायै नमः। २- श्रीलक्ष्म्यै नमः। ३- श्रीलोलाक्ष्यै नमः। ४- श्रीलक्ष्मणायै नमः। ५- श्रीलक्ष्मणार्चितायै नमः। ६- श्रीलक्ष्मण - प्राण - रक्षिण्यै नमः। ७- श्रीलाकिन्यै नमः। ८- श्रीलक्ष्मण-प्रियायै नमः। ९- श्रीलोलायै नमः। १०- श्रीलकारायै नमः। ११- श्रीलोमशायै नमः। १२- श्रीलोल-जिह्वायै नमः। १३- श्रीलज्जा-वत्यै नमः। १४- श्रीलक्ष्यायै नमः। १५- श्रीलाक्ष्यायै नमः। १६- श्रीलक्ष-रतायै नमः। १७- श्रीलकाराक्षर - भूषितायै नमः। १८- श्रीलोल - लयात्मिकायै नमः। १९- श्रीलीलायै नमः। २०- श्रीलीला - वत्यै नमः। २१- श्रीलाङ्गल्यै नमः। २२- श्रीलावण्यामृत-सारायै नमः। २३- श्रीलावण्यामृत - दीर्घिकायै नमः। २४- श्रीलज्जायै नमः। २५- श्रीलज्जा-मत्यै नमः।

२६ - श्रीलज्जायै नमः । २७ - श्रीललनायै नमः । २८ - श्रीललन - प्रियायै नमः। २९- श्रीलवणायै नमः। ३०- श्रीलवत्यै नमः। ३१- श्रीलसायै नमः। ३२- श्रीलाक्षक्यै नमः। ३३- श्रीलुब्धायै नमः। ३४- श्रीलालसायै नमः। ३५- श्रीलोक - मातायै नमः। ३६- श्रीलोक - पूज्यायै नमः। ३७- श्रीलोक - जनन्यै नमः। ३८- श्रीलोलुपायै नमः। ३९- श्रीलोहितायै नमः। ४०- श्रीलोहिताक्ष्यै नमः। ४१- श्रीलिङ्गाख्यायै नमः। ४२- श्रीलिङ्गेश्यै नमः। ४३- श्रीलिङ्ग-गीत्यै नमः। ४४- श्रीलिङ्ग-भवायै नमः। ४५- श्रीलिङ्ग-मालायै नमः। ४६- श्रीलिङ्ग-प्रियायै नमः। ४७- श्रीलिङ्गाभिधायिन्यै नमः। ४८- श्रीलिङ्गायै नमः। ४९- श्रीलिङ्ग-नाम-सदानन्दायै नमः। ५०- श्रीलिङ्गामृत-प्रीतायै नमः।

५१- श्रीलिङ्गार्चन-प्रीतायै नमः। ५२- श्रीलिङ्ग-पूज्यायै नमः। ५३- श्रीलिङ्ग-रूपायै नमः। ५४- श्रीलिङ्गस्थायै नमः। ५५- श्रीलिङ्गालिङ्गन-तत्परायै नमः। ५६- श्रीलता-पूजन-रतायै नमः। ५७- श्रीलता-साधक-तुष्टिदायै नमः। ५८- श्रीलता-पूजक-रक्षिण्यै नमः। ५९- श्रीलता -साधन-सिद्धिदायै नमः। ६०- श्रीलता-गृह-निवासिन्यै नमः। ६१- श्रीलता-पूज्यायै नमः। ६२- श्रीलताराध्यायै नमः। ६३- श्रीलता-पुष्पायै नमः। ६४- श्रीलता-रतायै नमः। ६५- श्रीलता-धारायै नमः। ६६- श्रीलता-मय्यै नमः। ६७- श्रीलता-स्पर्शन - सन्तुष्टायै नमः। ६८- श्रीलताऽऽलिङ्गन-हर्षितायै नमः। ६९- श्रीलता-विद्यायै नमः। ७०- श्रीलता - सारायै नमः। ७१- श्रीलताऽऽचारायै नमः। ७२- श्रीलता-निधये नमः। ७३- श्रीलवङ्ग-पुष्प-

सन्तुष्टायै नमः। ७४- श्रीलवङ्ग-लता-मध्यस्थायै नमः। ७५- श्रीलवङ्ग-लतिका-रूपायै नमः।

७६- श्रीलवङ्ग-होम-सन्तुष्टायै नमः। ७७- श्रीलकाराक्षर-पूजितायै नमः। ७८- श्रीलकार-वर्णोद्भवायै नमः। ७९- श्रीलकार-वर्ण-भूषितायै नमः। ८०- श्रीलकार-वर्ण-रुचिरायै नमः। ८१- श्रीलकार-बीजोद्भवायै नमः। ८२- श्रीलकाराक्षर - स्थितायै नमः। ८३- श्रीलकार-बीज-निलयायै नमः। ८४- श्रीलकार-बीज-सर्वस्वायै नमः। ८५- श्रीलकार-वर्ण- सर्वाङ्गायै नमः। ८६- श्रीलक्ष्य-छेदन-तत्परायै नमः। ८७- श्रीलक्ष्य-धरायै नमः। ८८- श्रीलक्ष्य-घूर्णायै नमः। ८९- श्रीलक्ष - जापेन - सिद्धिदायै नमः। ९०- श्रीलक्ष-कोटि-रूप-धरायै नमः। ९१- श्रीलक्ष-लीला-कला-लक्ष्यायै नमः। ९२- श्रीलोक-पालेनार्चितायै नमः। ९३- श्रीलाक्षारग-विलेपनायै नमः। ९४- श्रीलोकातीतायै नमः। ९५- श्रीलोपा-मुद्रायै नमः। ९६- श्रीलज्जा-बीज - स्वरूपिण्यै नमः। ९७- श्रीलज्जा - हीनायै नमः। ९८- श्रीलज्जा - मय्यै नमः। ९९- श्रीलोक- यात्रा-विधायिन्यै नमः। १००- श्रीलास्य-प्रियायै नमः।

१०१- श्रीलय - कर्यै नमः। १०२- श्रीलोक - लयायै नमः। १०३- श्रीलम्बोदर्यै नमः। १०४- श्रीलघिमादि - सिद्धि - दात्र्यै नमः। १०५- श्रीलावण्य -निधि -दायिन्यै नमः। १०६- श्रीलकार-वर्ण-ग्रथितायै नमः। १०७- श्रीलं - बीजायै नमः। १०८- श्रीललिताम्बिकायै नमः।



भगवती के 'नाम-मन्त्रों' द्वारा आराधना

अपने श्वास-प्रश्वास के साथ भगवती ललिता के 'नाम-मन्त्रों' का जप करने पर, 'नाम-मन्त्र' श्वास-प्रश्वास के साथ एकाकार हो जाता है। ऐसी अवस्था में, 'प्राणायाम' की क्रिया स्वतः होने लगती है। 'मन' की चञ्चलता नष्ट हो जाती है और मन की स्थिरता के कारण 'स्वतः कुम्भक' होने लगता है।

फिर क्रमशः बाहरी 'नाम'-जप भी बन्द हो जाता है और साधक— 'नाम-मन्त्र' का साक्षात्कार करता है।

संक्षेप में, 'नाम'-साधना से 'प्राणायाम' आदि सभी क्रियाएँ स्वतः सिद्ध हो जाती हैं और 'कुण्डलिनी' का जागरण होकर भगवती की लीला का साक्षात्कार होता है।